भक्तवर श्री डा० भगवती प्रसाद सिंह

प्रिन्सिपल बलरामपुर कालेज की सेवा में

* श्री सीतारामचन्द्राभ्यांनमः

ॐ

श्री जानकी-स्तवराज

"सान्वयार्थ प्रकाशिनी"

हिन्दी टीका सहित

अनुवादक—

पं० गोविन्ददास 'सन्त'

प्रकाशक—

श्री गालवाश्रम—गलता स्थान

जयपुर

प्रथमबार	श्री जानकी नवमी	मूल्य
१०००	सं० २००६	चार आने

सादर सप्रेम समर्पित.

दीन भरत शरण

क्रमांक कु० १९ २०१३

३०. १०-५६

* श्री सीतारामचन्द्राभ्यां नमः *

साकेत

श्री जानकी-स्तवराज

"सान्वयार्थ प्रकाशिनी"

हिन्दी टीका सहित

अनुवादक—

पं० गोविन्ददास 'सन्त'

प्रकाशक—

श्री गालवाश्रम—गलता स्थान

जयपुर

प्रथमबार	श्री जानकी नवमी	मूल्य
१०००	सं० २००६	चार आने

॥ श्री हरिः ॥

नम्र-निवेदन

प्रिय पाठक प्रेमीजन,

इस स्तोत्र की 'सान्वयार्थप्रकाशिनी' नामक सरल टीका सुप्रतिष्ठित सन्माननीय भक्त श्री भरतशरण विश्वम्भर प्रसादजी माथुर भूतपूर्व प्रोफेसर गवर्नमेंट कॉलेज अजमेर की प्रेरणा से की गई है और आपने इसके प्रकाशनार्थ द्रव्य सेवा की है एतदर्थ आपको हार्दिक धन्यवाद देने के साथ-साथ भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि आप की श्री युगल सरकार श्री सीतारामचन्द्रजी के चरण कमलों में अहर्निश निरन्तर अनुराग (प्रेमाभक्ति) की उत्तरोत्तर बृद्धि होते हुए दीर्घायु हो।

गत दिनों में मेरी धर्मपत्नी का देहावसान हो जाने से चित्त की बृत्ति के स्थिर न रहने के कारण तथा दृष्टि दोष से यदि कोई अशुद्धि रह गई हो तो विद्वज्जन क्षमा करेंगे।

प्रार्थी—

पं० गोविन्ददास 'सन्त'

॥ श्री सीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥

श्रीगुरवे नमः श्रीहनुमते नमः

श्रीमते रामानन्दाय नमः

प्रस्तावना

एक समय आशुतोष भगवान् श्री शिवजी ने भगवान् श्री रामचन्द्रजी के परात्पर स्वरूप के साक्षात् करने की इच्छा से दिव्य सौ वर्ष तक षडक्षर श्री राममन्त्र का सविध अनुष्ठान किया। इसके अनन्तर भगवान् श्री रामचन्द्रजी ने दर्शन दिये और आज्ञा दी कि यदि आप मेरे निज स्वरूप के दर्शन करना चाहते हैं तो मेरी परम आह्लादिनी शक्ति श्री जानकीजी की स्तुति करिए।

यह वही स्तवराज है जिससे श्री शिवजी ने श्री जानकी जी को प्रसन्न किया था। अतः यह सिद्ध है कि श्री भगवान् रामचन्द्रजी की ऐकान्तिक भक्ति प्राप्त करने के लिए श्री किशोरीजी की कृपा प्राप्त करना अत्यावश्यक है।

जा की ओर तनिक हँसी हेरत
करत सहाय राम जू ता की।

(श्री अग्रस्वामि)

जनक सुता जग जननी जानकी।
अतिशय प्रिय करुणानिधानकी ॥
ताके युगपद कमल मनाऊं।
जासु कृपा निर्मल मतिपाऊं।

(गो० श्री तुलसीदासजी)

इस स्तोत्र की 'सान्वयार्थप्रकाशिनी नामक हिन्दी टीका पूज्यपाद पं० श्री गोविन्ददासजी धर्मशास्त्री द्वारा करवादी गई है जिससे पाठक प्रेमी जनों को अर्थ ज्ञान में सहायता हो। और साथ में श्री सीतामन्त्र जप विधि, शरणागति पञ्चक, श्री रामवल्लभास्तव, श्री सीता कवच, श्री जानकी कवच, श्री जानकी पञ्चक, श्री युगलचरणचिह्न और हिन्दी में प्रार्थना एवं आरती आदि भी भक्त प्रेमी जनों के लाभार्थ दे दिए हैं।

आशा है कि भक्तजन इस दिव्य स्तोत्र से लाभ उठा कर पण्डितजी महाराज के श्रमको सफल बनायेंगे।

विनीत—

भक्तचरण-रज-कृपाभिलाषी—

दासानुदास

श्रीभरतशरण

विश्वम्भर प्रसाद माथुर

श्री सीता पतये नमः।

श्री सीता मन्त्रजप-विधि

विनियोगः—

ॐ अस्य श्री सीतामन्त्रस्य श्री राम ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्री सीता देवता। श्रीं बीजम्। नमः शक्तिः। श्री सीता यै कीलकम्। मम चतुर्विधपुरुषार्थाभीष्टार्थे वा श्री युगलवरमाधुर्यदिव्यमङ्गलविग्रहयोर्नित्यानुभव ध्यान सिद्धये च श्री सीतामन्त्रजपेविनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः—

ॐ श्री राम ऋषयेनमः शिरसि। ॐ गायत्री छन्द से नमो मुखे। ॐ श्री सीता देवतायै नमो हृदये। ॐ श्रीं बीजाय नमो नाभौ। ॐ नमः शक्तये नमो गुह्य देशे। ॐ श्री सीतायै कीलकाय नमः पादयोः। ॐ जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

पदन्यासः—

ॐ श्रीं नमो मुखे। ॐ सीतायै नमो हृदये। ॐ नमो नमः सर्वाङ्गे।

अक्षर न्यासः—

ॐ श्रीं ललाटे। ॐ सीं नासाग्रे। ॐ तां कण्ठे। ॐ यैं हृदये। ॐ नं नाभौ। ॐ मं पादयोः।

कर न्यासः—

ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यांनमः। ॐ श्रीं तर्जनीभ्यांनमः। ॐ श्रूं मध्यमाभ्यांनमः। ॐ श्रैं अनामिकाभ्यांनमः। ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यान्नमः ॐ श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यान्नमः।

हृदयन्यासः—

ॐ श्रां हृदयायनमः। ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ श्रुं शिखायै वषट्। ॐ श्रैं कवचायहुम। ॐ श्रौं नेत्राभ्यांवौषट् ॐ श्रः अस्त्रायफट्।

ध्यानम्

कौशेयपीतवसनामरविन्दनेत्रां।
रामप्रियाऽभयवरोद्यतपद्महस्ताम्।
उद्यच्छताकंसदृशीं परमासनस्थां।
ध्याये द्विदेह तनयां सखिभिः सहस्त्रैः॥
स्वर्णाभामम्बुजकरां रामलोकन तत्पराम्।
ध्यायेत्षट्कोणमध्यस्थरामाङ्कोपरिशोभिताम्॥

श्री जानकी स्तवराज के पाठ का विनियोग—

ॐ अस्य श्रीजानकीस्तवराजस्तोत्रस्य श्रीरामऋषिः। वसन्ततिलका छन्दः-श्री सीता देवता-ममधर्मादि चतुर्विध पुरुषार्थाभिष्टसिध्यर्थेऽथवा श्रीयुगलवर चरण कमलयो-रहेतुकी भक्तिः प्राप्त्यर्थे श्रीजानकीस्तवराजस्तोत्रस्य पाठे विनियोगः।

सूचना—श्री सीतामन्त्र के विनियोग और न्यास आदि के साथ "माले माले महामाये सर्व शक्ति स्वरू-पिणी। चतुर्वर्गस्त्वयिन्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धि-दाभव" इस मन्त्र से माला की प्रार्थना करके आदि और अन्त में एक एक माला श्रीसीतामन्त्र की जप कर और श्री जानकी स्तवराज का विनि-योग करके इस स्तवराज का पाठ करें। निश्चय ही श्री किशोरीजी की कृपा से मनोका-मना पूर्ण होगी।

॥ श्रीहरिः ॥

श्रीजानकी-स्तवराज

तां ध्याये स्तवराजेन प्रोक्तरूपां परात्पराम् ।

आह्लादिनीं हरेःकांचिच्छक्तिं सात्वतसेविताम्॥ १॥

सान्वयार्थ०

(अहम्)=	(मैं)
प्रोक्तरूपाम् =	वेदादि सच्छास्त्रों द्वारा वर्णित है रूप जिसका ऐसी
परात्पम् =	परसेभी पर
आह्लादिनीम् =	आनन्द स्वरूपा
सात्वतसेविताम् =	वैष्णवों द्वारा सेवित
हरे =	भगवान श्री रामचन्द्रजी की
ताम् =	उस
कांचित् =	किसी
शक्तिम् =	शक्तिका
स्तवरजेन =	स्तवराजद्वारा
ध्याये =	ध्यान करता हूं ।

❋ श्रुतिरुवाच ❋

कीदृशः स्तवराजोऽयं केन प्रोक्तः सुरेश्वर ।

कथ्यतां कृपया देव ! जानकीरूपबोधकः ॥२॥

सान्वयार्थ०

हेसुरेश्वर =	हे देवताओं के स्वामी !
जानकीरूपबोधकः =	श्री जानकीजी के स्वरूप का ज्ञान कराने वाला
अयम् =	यह
स्तवराजः =	स्वत राज
कीदृशः =	कैसा है, (और)
केन =	किसने
प्रोक्तः =	कहा है
हेदेव =	हे देव !
कृपया =	कृपा करके
कथ्यताम् =	कहिए ।

* श्रीसंकर्षणउवाच *

ब्रवीमि स्तवराजं ते श्रीशिवेन प्रभाषितम् ।
श्रुतं श्रीवक्त्रतो दिव्यं पावनानां च पावनम् ॥३॥

सान्वयार्थ०

(अहम) =	(मैं)
श्रीवक्त्रतः =	श्री रामचन्द्रजी के मुख से
श्रुतम् =	सुना हुआ (और)
श्रीशिवेन =	श्री शिवजी के द्वारा
प्रभाषितम् =	कहा हुआ

दिव्यम् =	दिव्य
पावनानांचपावनम् =	पवित्रोंको भी पवित्र करने वाले
स्तवराजम् =	स्तवराज को
ते (तुभ्यम्) =	तुम्हारे लिए
ब्रवीमि =	कहता हूँ ।

चकाराराधनं तस्य मन्त्रराजेन भक्तितः ।

कदाचिच्छ्रीशिवो रूपं ज्ञातुमिच्छुर्हरेः परम् ॥४॥

सान्वयार्थ०

हरेः =	श्री रामचन्द्रजी के
परम् =	सर्वोत्कृष्ट
रूपम् =	(मूल) रूपको
ज्ञातुम् =	जानने की
इच्छुः =	इच्छा करने वाले
श्रीशिवः =	श्री शिवजीने
कदाचित् =	किसी समय
भक्तितः =	भक्ति पूर्वक
तस्य =	उन श्री रामचन्द्रजी का
मन्त्रराजेन =	मन्त्रराज द्वारा
आराधनम् =	आराधन
चकार =	किया ।

दिव्यवर्षशतं वेदविधिना विधिवेदिना ।

जजाप परमं जाप्यं रहस्ये स्थितचेतसा ॥५॥

सान्वयार्थ०

रहस्ये =	एकान्तमें (उन श्री शिवजी ने)
विधिवेदिना =	विधि को जानने वाले
स्थिरचेतसा =	स्थिर चित्त से (तथा)
वेदविधिना =	वेद की विधि के अनुसार
दिव्य वर्ष शतम् =	दिव्य सौ वर्ष पर्यन्त
परमम् =	परम
जाप्यम् =	(श्री राममन्त्रराज का) जप
जजाप =	जपा अर्थात् जप किया ।

प्रसन्नोभूत्तदा देवः श्रीरामः करुणाकरः ।
मन्त्राराध्येन रूपेण भजनीयः सतां प्रभुः ॥६॥

सान्वयार्थ०

तदा =	तब
सताम् =	भक्तों (वैष्णवों के)
भजनीयः =	भजन करने योग्य
प्रभुः =	सर्व समर्थ
करुणाकरः =	दयालु
देवः =	देव
श्रीरामः =	श्री रामचन्द्रजी
मन्त्राराध्येन =	मन्त्रद्वारा आराधन करने योग्य

रूपेण =	रूप से
प्रसन्नः =	प्रसन्न
अभूत =	हुए।

*** श्रीराम उवाच ***

द्रष्टुमिच्छसि यद्रूपं मदीयं भावनास्पदम्।
आह्लादिनीं परांशक्तिं स्तूयाः सात्वतसम्मताम् ॥७॥

सान्वयार्थ०

यत् =	जिस
मदीयम् =	मेरे
भावनास्पदम् =	भावनामय
रूपम् =	रूप को
द्रष्टुम् =	देखने की
इच्छसि =	इच्छा करते हो (तो)
सात्वतसम्मताम् =	भक्त (वैष्णव) जन सम्मत
मे =	मेरी
आह्लादिनीम् =	आह्लादिनी
पराम् =	परा (सर्वोत्कृष्ट)
शक्तिम् =	शक्ति की
स्तूयाः =	स्तुति करो।

तदाराध्यस्तदारामस्तदधीनस्तया विना।
तिष्ठामि न क्षणं शम्भो ! जीवनं परमं मम ॥८॥

सान्वयार्थ०

हेशम्भो =	हे शिवजी
(अहम्) =	(मैं)
तत् =	उनके सहित
आराध्यः =	आराध्य हूं.
तत् =	उन्ही से हमको
आरामः =	आनन्द है,
तत् =	उन्ही के हम
आधीनः =	आधीन हैं,
तया =	उनसे
विना =	रहित (होकर)
क्षणम् =	क्षण भरभी
न –	नहीं
तिष्ठामि =	रहता हूँ (क्योंकि वे)
मम =	मेरी
परमम् =	परम
जीवनम् (अस्ति)	जीवन (है)

इत्युक्त्वा देवदेवेशो वशीकरणमात्मनः ।
पश्यतस्तस्य रूपं स्वमन्तर्धानं दधौ प्रभुः ॥९॥

सान्वयार्थ०

देवदेवेशः =	देवाधि देवों के स्वामी
प्रभुः =	सर्व समर्थ श्री रामजी ने

आत्मनः =	अपने
वशीकरणम् =	वशमे होने का (उपाय)
इत्युक्त्वा =	इस प्रकार कह कर
तस्य =	उन
शिवस्य	श्री शिवजी के
पश्यतः =	देखते-देखते
स्वम् =	अपने
रूपम् =	रूपको
अन्तर्धानम् =	अन्तर्धान
दधौ =	कर लिया।

श्रुत्वारूपं तदा शंभुः तस्याः श्री हरिवक्त्रतः।
अचिन्तयत्समाधाय मनः कारणमात्मनः ॥१०॥

सान्वयार्थ–

तदा =	तब
शंभुः =	श्री शिवजी ने
तस्याः =	उन श्री जानकीजी के
रूपम् =	रूपको
श्री हरिवक्त्रतः =	श्री रामजी के मुख से
श्रुत्वा =	सुन कर
आत्मनः =	अपने
कारणम् =	कारण रूप
मनः =	मन को

समाधाय =	एकत्र करके
अचिन्तयत् =	ध्यान किया।

अस्फुरत्कृपया तस्य रूपं तस्याः परात्परम्।
दुर्निरीक्ष्यं दुराराध्यं सात्वतां हृदयङ्गमम् ॥११॥
आश्रयं सर्वलोकानां ध्येयं योगिविदां तथा।
आराध्यं मुनिमुख्यानां सेव्यं संयमिनां सताम् ॥१२॥

सान्वयार्थ।

दुर्निरीक्ष्यम् =	कठिनता से देखने योग्य,
दुराराध्यम् =	कष्टसे आराधन करने योग्य
सात्वताम् =	भक्तों (वैष्णवों) के
हृदयङ्गमम् =	हृदय में निवास करने योग्य
सर्वलोकानाम् =	सब लोगों का
आश्रयम् =	आश्रय
योगिविदाम् =	श्रेष्ठयोगियों के
ध्येयम् =	ध्यान करने योग्य
मुनिमुख्यानाम् =	मुख्य-मुख्य मुनियों के
आराध्यम् =	आराध्य
संयमिनाम् =	जितेंद्रिय भक्तों के
सेव्यम् =	सेवा करने योग्य
तस्याः =	उन श्री जानकी जी का
परात्परम् =	परात्पर
रूपम् =	रूप

कृपया =	उन्हीं की कृपा से
तस्य =	उन श्री शिवजी के (सामने)
अस्फुरत् =	प्रत्यक्ष प्रकट हुआ।

दृष्ट्वाश्चर्यमयं सर्वं रूपं तस्याः सुरेश्वरः।
तुष्टावजानकीं भक्त्या मूर्तिमंतीं प्रभाविनीम् ॥१३॥

सान्वयार्थ०

सुरेश्वरः =	देवताओं के स्वामी
(श्री शिवः)	(श्री शिवजी)
तस्याः =	उन श्री जान की जी के
आश्चर्यमयम् =	आश्चर्य युक्त
सर्वम् =	सम्पूर्ण (नखशिखमय)
रूपम् =	रूप को
दृष्ट्वा =	देखकर
भक्त्या =	भक्ति के कारण
मूर्तिमंतीम् =	स्वरूप धारण किए (प्रकट हुई)
प्रभाविनीम् =	प्रभावशाली
जानकीम्	श्री जान की जी की
तुष्टाव =	स्तुति करने लगे।

स्तुतिप्रारम्भ

❀ चरणारविन्द ❀

वन्देविदेहतनयापदपुण्डरीकं
कैशोरसौरभसमाहृतयोगिचित्तम् ।
हन्तुं त्रितापमनिशं मुनिहंससेव्यं
सन्मानसालिपरिपीतपरागपुञ्जम् ॥ १४ ॥

सान्वयार्थ०

(अहम्)	(में)
कैशोरसौरभसमाहृत	किशोरावस्था रूपी सुगन्ध से
योगिचित्तम् =	योगियों के चित्त को हरण करने-वाले
त्रितापम् =	तीनों तापों को
हन्तुम् =	नष्ट कर ने के लिए
अनिशम् =	सर्वदा
मुनिहंससव्यम् =	परम हंस नुनियों से सेवन कर-ने योग्य
सन्मानसालिपरि पीत =	भक्तों के मानस रूपी भ्रमरों द्वारा
परागपुञ्जम् =	भली प्रकार पीए गये पराग-वाले ऐसे
विदहेतनयापद	श्री विदेह कुमारीके चरण-
पुण्डरीकम् =	कमलों की
वन्दे =	वन्दना करता हूँ ।

❋ चरणतल ❋

पादस्य यावकरसेन तलं सुरक्तं
सौभाग्यभाजनमिदं हि परं जनानाम् ।
युक्तीकृतं सुभजता तव देवि नित्यं
दत्ताश्रयं सुमनसां मनसानुरागम् ॥ १५ ॥

सान्वयार्थ०

हेदेवी =	हे देवि !
तव =	आप के
पदस्य =	चरण के
तलम् =	तल
यावकरसेन =	महावर से
सुरक्तम् =	भली प्रकार लाल है
हि =	निश्चय कर के
इदम् =	यह
जनानाम् =	भक्तोंके
परम् =	परम
सौभाग्यभाजनम् =	सौभाग्य के स्थान हैं ।
सुमनसाम् =	सुन्दर मन से
नित्यम् =	नित्य प्रति
सुभजताम् =	भली प्रकार भजन करने वाले (प्रेमीजन)
(तव)	(आप के)
दत्ताश्रयम् =	आश्रय दिये हुये (अपने)

मनसा = मन के द्वारा
अनुरागम् = अनुराग (प्रेम) को (उन में)
युक्तीकृतम् = मिला दिया है।

भाव यह है कि आपके उन प्रेमी भक्तों के अनुराग (प्रेम) का स्वाभाविक लाल रंग ही मानों आप के चरण तल का महावर है।

* अंगुली *

पादांगुलीनखरुचिस्तव देविरम्या
योगीन्द्रवृन्दमनसा विशदा विभाव्या।
त्रैताप क्लान्त्युपशमाय शशांककान्ति
र्दोषेण किं समुपयाति तुलां युता सा ॥१६॥

सान्वयार्थ०

हे देवि = हे देवि !
योगीन्द्रवृन्द्रमनसा = श्रेष्ठ योगीगणों के मन से
विभाव्या = सेवित
तव = आपके
पादांगुलीनखरुचिः = चरणोंके अंगुलियों के नख की कान्ति
विशदा = स्वच्छ (और)
रम्या = बड़ी सुन्दर है,
किम् = क्या
दोषेण = दोष (कलंक) से
युता = युक्त
सा = वह

शशाङ्ककान्ति =	चन्द्रमा की कान्ति
त्रैतापक्लान्त्युपशमाय =	तीनों तापों को नष्ट करने के लिए
तुलाम् =	समानता को
याति =	प्राप्त हो सकती है
(नयातिइत्यर्थः) =	(अर्थात नहीं)

* नूपुर *

मञ्जीरधीरनिनदं कलहंसकाली
हासाय सा भवति भावयति त्वदीयम् ।
किञ्चापरं रसिक मौलि मनो नियन्तु
दृष्टं मया परमकौशलमत्र तस्य ॥१७॥

सान्वयार्थ०

(हेदेवि) =	(हे देवि !)
सा =	वह (प्रसिद्ध)
कलहंसकाली =	छोटे-छोटे कल हंसों की पंक्ति
त्वदीयम् =	आपके
मञ्जीरधीरनिनदम् =	नूपुरों की गम्भीर ध्वनि की
भावयति =	समानता करती हुई
हासाय =	हास्य के लिए
भवति =	होती है (अर्थात हास्य को प्राप्त होती है)
किञ्च =	और
अपरम् =	दूसरे

अत्र =	यहां पर
मया =	मैंने
रसिकमौलिमनः =	रसिक शिरोमणि श्रीराम के मनको
नियन्तुम् =	वश में करन के लिये
तस्य =	उन नूपुरों के नाद की
परमकौशलम्	अत्यन्त चातुरी
दृष्टम् =	देखी है। (जो कल हंसों में नहीं पाई जाती)

* गुल्फ *

सिद्धीशबुद्धिवररञ्जनगूढगुल्फौ
पादारविन्दयुगलौ जनतापवर्गौ ।
विन्दन्ति ते त्रिभुवनेश्वरि ! भावसिद्धिं
ध्यायन्ति ये निखिल सौभगभानुभाजौ ॥१८॥

सान्वयार्थ०

हेत्रिभुवनेश्वरि=	हे तीनों लोकों की स्वामिनी !
ये=	जो पुरुष
सिद्धीशबुद्धिवररञ्जन-गूढगुल्फौ =	श्री रामजी की श्रेष्ठ बुद्धि को प्रसन्न करने वाले गूढ गुल्फों संयुक्त
जनतापवर्गौ=	भक्त जनों के मोक्ष रूप

निखिलसौभगभानु-
भाजौ= सम्पूर्ण सौन्दर्य के सूर्य श्रीरामजी की सेवा में रहने वाले
ते= आपके
पादारविन्दयुगलौ= दोनों चरण कमलों का
ध्यायन्ति= ध्यान करते हैं,
ते= वे पुरुष
भावसिद्धिम्= भाव सिद्धि को
विन्दन्ति= प्राप्त करते हैं।

※ चरण ※

हेमाभिवर्द्धितविभूषणभूषितंते
त्रैलोक्यतेज इव मञ्जुलपुञ्जभूतम्।
भाविस्म सुन्दरि, पदं सरसीरुहाभं
भीताभयप्रदमनन्तमनोभिध्येयम् ॥१६॥

सान्वयार्थ०

हे सुन्दरि= हे सुन्दरी!
(अहम्)= (मैं)
हेमाभिवर्द्धितविभूषण-
भूषितम्= सुवर्ण रचित विभूषणों से शोभित
त्रैलोकयद्दवमञ्जुल
पुञ्जभूतम= तीनों लोकों के तेज के समान-सुन्दरता युक्त पदार्थों के समूह रूप

सरसीरुहाभम् = कमल के समान आभावाले
भीताभयप्रदम् = संसार से डरे हुए जनों को अभय-
देने वाले
अनन्तमनोभिध्येयम् = श्री रामजी के मनके ध्यान करने
योग्य
ते = आपके
पदम् = दोनों चरणों की
भाविस्म = भावना करने की इच्छा
(भावितुं इच्छामि) करता हूं।

❋ नितम्ब ❋

चक्राभहारिसुनितम्बयुगं भवत्या
ध्येयं सुधीभिरनिशं रसनाभिषक्तम् ।
ध्यानास्पदं रघुपतेर्मनसो मुनीनां
भावैकगम्यममरेशनताङ्घ्रिपद्मे ॥२०॥

सान्वयार्थ०

हे अमरेशनताङ्घ्रिपद्मे = हे इन्द्रादिकोंसे नमस्कृत चरण-
कमल वाली !
(अहम्) = (मैं)
चक्राभहारि = चक्रकी कान्ति को हरने वाले
सुधीभिः = बुद्धि मानो द्वारा
अनिशम् = रात दिन

ध्येयम् = ध्यान करने योग्य
रसनाभिषक्तम् = क्षुद्र घण्टिका से युक्त
रघुपतेः = रघुपति के
मनसः = मनके
ध्यानास्पदम् = ध्यान के स्थान
मुनीनाम् = मुनिजनों के
भावैकगम्यम = केवल भाव करने योग्य
भवत्याः = आपके
सुनितम्बयुगम् = सुन्दर दोनों नितम्बों की
भावयामि = भावना करता हूँ।

ॐ कटि ॐ

कौशेय वस्त्र परिणद्धमलंकृतं ते
कार्तस्वराशनि मणि प्रवरप्रवेकैः।
रत्नोत्तमै रसनया ग्रहकान्तिमद्भि-
र्भास्वन्ति निर्मिततया स्वधियन्ति मध्यम् ॥२१॥

सान्वयार्थ०

(हे देवि) = (हे देवी!)
भक्ताः = भक्त लोग
कौशेयवस्त्रपरिणद्धम् = रेशमी वस्त्र से सुशोभित
कार्तस्वराशनिमणि- सुवर्ण हीरा और उत्तमोत्तम
प्रवरप्रवेकै = मणियों से

अलंकृतम् =	सुशोभित
ग्रहकान्तिमद्भिः =	ग्रहों के समान कान्तिमान्
रत्नोत्तमैः =	श्रेष्ठ रत्नों से
निर्मिततया =	रचित होने के कारण
रसनया	क्षुद्र घण्टिका से सुशोभित
भास्वन्ति =	सूर्य के समान दीप्तिमान्
ते =	आपके
मध्यम् =	कटि भाग का
स्वधियन्ति =	भली प्रकार ध्यान करते हैं।

❊ उदर ❊

अश्वत्थपत्रनिभमम्ब धियोदरन्ते
भाव्यं भवाब्धितरिकेवलकालनाशे ।
भूयो न भावि जननी जठरे निवास
स्तेषां मनो धरणिजेऽत्र सुलग्नमासीत् ॥२२॥

सान्वयार्थ०

हेभवाब्धितरि =	हे संसार समुद्रके लिए नौका-रूप,
हेकेवलकालनाशे =	एक मात्र काल का नाश-करने वाली,
हेधरणीजे =	पृथ्वी की पुत्री
हेअम्ब =	माता !

अश्वत्थपत्रनिभम् =	पीपल के पत्ते के समान
धिया =	बुद्धिसे
भाव्यम् =	भावना करने योग्य
ते =	आपका
उदरम् =	उदर है,
येषाम् =	जिन भक्तों का
मनः =	मन
अत्र =	इसमें
सुलग्नआसीत्	भली प्रकार लग चुका है,
तेषाम् =	उन भक्तों का
भूयः =	फिर
जननीजठरेनिवासः =	माताके गर्भ में निवास
न =	नहीं
भावि =	होगा।

* नाभि *

नाभीहृदं हरिमनःकरिणः कृशांशो
पुष्टिप्रदं प्रचलितं त्रिवलीतरङ्गम्।
राजिसुशैवलनिभं अभिभूतरोम्णां
शान्त्यै तव त्रितपतामतिभावयामः ॥२३॥

सान्वयार्थ०

(हेदेवि) =	(हे देवी !)
(वयम्) =	(हम)

त्रितपताम् =	तीनों तापों से तपते हुओं की
शान्त्यै =	शान्ति के लिए
हरिमनः =	श्री रामजी के मनरूपी
करिणः =	हाथी की
कृशांशः =	कृशता को
पुष्टिप्रदम् =	पुष्टि देने वाले (और)
त्रिवलीतरङ्गम् =	जिसमें त्रिवली रूपतरङ्ग
प्रचलितम् =	चल रही हैं (तथा)
अभिभूतरोम्णाम् =	आवर्त रूप रोमों की पंक्ति-से युक्त
राजि =	शुशोभित
सुशैवलनिभम् =	सुन्दर सेवाल के सामान है-ऐसे
तव =	आपके
नाभीह्रदम् =	नाभी कुण्ड की
अतिभावयामः =	अतिशय भावना करते हैं।

❊ वक्षोज ❊

नीलाभकञ्चुकमणीन्द्रसमूहनिष्कै-
र्वक्षोजयुग्ममतितुङ्गमलंकृतं ते।
हारैर्मनोहरतरैस्तरूणि ! क्षितीजे !
सौन्दर्यवारिनिधिवारितरंगसङ्गम् ॥२४॥

सान्वयार्थ०

हेक्षितिजे =	हे भूमि से उत्पन्न
हेतरुणि =	तरुणी (श्री जानकी जी !)
(वयम्)=	(हम)
नीलाभकञ्चुकमणीन्द्र-समूहनिष्कैः =	नील कान्ति वाली कञ्चुक और श्रेष्ठ मणी ममूह से रचित निष्कों (और)
मनोहरतरैः =	परम मनोहर
हारैः =	हारो द्वारा
अलङ्कृतम् =	सुशोभित
अतितुङ्गम् =	अति ऊंचे
सौन्दयवारिनिधि =	सौन्दर्य रूप समुद्र के
वारितरङ्गसंगम् =	वारि तरङ्ग के संगम रूपके समान
ते =	आपके
वक्षोजयुग्मम् =	दोनों वक्षोजों की
(भावयाम =	भावना करते हैं ।)

* वाहु *

वाहू मृणालमदखण्डनपण्डितौ ते
भीताभयप्रदवदान्यतमौ जनानाम् ।
रुक्माङ्गदाङ्कितबिटङ्कितमुद्रिकौ तौ
हैरण्यकङ्कणधृतावलयौ भजामः ॥२५॥

सान्वयार्थ०

(हेदेवि)=	(हे देवी !)
(वयम)=	(हम)
मृणालमदखण्डन पण्डितौ =	मृणाल के मदको खण्डन करने में निपुण
जनानाम =	भक्तों के (तथा)
भीताभयप्रदवदान्यतमौ =	(संसार भयसे) डरे हुए लोगों के अभय दान में अति उदार
रुकमाङ्गदाङ्कितविटङ्कित-मुद्रिकौ =	सुवर्ण रचित अंगदो से चिह्नित और जिनमें मुद्रिकाएं सुशोभित हो रही हैं ऐसे
हैरण्यकङ्कणधृतौ-वलयौ =	सुवर्ण कङ्कणों से युक चूडियों को धारण करने वाले
ते =	आपके
तौ =	उन दोनों
बाहू =	बाहूओं को
भजाम =	भजते हैं ।

※ कण्ठ ※

कण्ठं कपोततरुणीगलकान्तिमोषं
भूषैरनेकविधभूषितमम्ब तुभ्यम् ।

ध्यायेम मानसविशुद्धिकृते कृपालो
योगीन्द्रभावितपदे शमदे शरण्ये ॥२६॥

सान्वयार्थ०

हेकृपालो =	हे कृपालु
हेय गीन्द्रभावितपदे =	योगीश्वरों द्वारा भावना किए गये हैं चरणारविन्द जिनके ऐसी
हेशमदे	शान्ति देनेवाली (तथा)
हेशरण्ये =	रक्षा करने वाली
हेअम्ब =	माता !
(वयम्)	(हम)
मानशविशुद्धिकृते =	मनको शुद्ध करने के लिए
कपोततरुणीगल-	कपोती के गले की कान्ति को
कान्तिमोषम् =	हरण करने वाले
भूषैरनेकविधभूषिनम् =	अनेक प्रकार के आभूषणों से सुशोभित
तुभ्यम् =	आपके
कण्ठम् =	कण्ठ का
ध्यायेमः =	ध्यान करते हैं

❋ मुखमण्डल ❋

वक्त्रेदुमिन्दुचयखण्डितमण्डितांशुं
खण्डांशपण्डितमनःपरिदण्डिताशम् ।

सन्मानसाब्जमुदितद्युतिदं वरेण्यं
रामाक्षितारकचकोरमहं भजे ते ॥२७॥

सान्वयार्थ०

अहम् =	मैं
इन्दुचय खण्डित-	चन्द्रसमूह के मद को खण्डित
मण्डितांशुम् =	करने वाले किरणों से मण्डित
खण्डाश पण्डितमनः-	न्यायशास्त्र के पण्डितों के मन को
परिदण्डिताशम् =	परिदण्डित करने वाले
सन्मानसाब्जमुदित-	भक्तों के मानस रूपी कमल को
द्युतिदम् =	प्रकाशित करने वाले
वरेण्यम् =	वरण करने योग्य
रामाक्षितारकचकोरम् =	श्री राम के नेत्रों के तारे जिसके चकोर हैं ऐसे
ते =	आपके
वक्त्रेन्दुम् =	चन्द्रमुख को
भजे =	भजता हूँ

❋ मुख ❋

ताम्बूलरागपरिरञ्जितदन्तपंक्ति
प्रद्योतिताधरमधःकृतबिम्बरागम् ।
ईषत्स्मितद्युतिकटाक्षविकाशिताशं
वक्त्रं परेशनयनास्पदमाभजे ते ॥ २८ ॥

सान्वयार्थ०

(हेदेवि) =	(हे देवी)
(अहम्) =	(मैं)
ताम्बूलरागपरिरञ्जित	ताम्बूल के रंग से रंगी हुई
दन्तपङ्क्तिप्रद्योतिताधरम् =	दातों की पंक्ति से प्रकाशित है अधर जिसमें
अधःकृतविम्बरागम् =	विम्बा फलकी लाली को जिस ने नीचा कर दीया है
इषत्स्मितद्युतिकटाक्ष विकाशिताशम् =	मन्द मुस्कान, कान्ति और कटाक्ष से सब दिशाओं को विकाशित करने वाले
परेशनयनास्पदम् =	श्री रामचन्द्र जी के नेत्रों के पात्र
ते =	आप के
वक्त्रम् =	मुख को
आभजे =	भजता हूँ ।

❋ नकवेसर ❋

नासाग्रमौक्तिकफलं फलदं परेशे
ध्यायन्ति ये च निजजाड्यविनाशहेतो ।
त्रैलोक्यनिर्मलपदं सुखदं त्वदीयं
स्वेच्छाभिकांक्षिण इदं बहुशो रसज्ञाः ॥२६॥

सान्वयार्थ०

(हेदेवि =	(हे देवी)
ये =	जो
वहुशोरसज्ञाः =	बहुत प्रका से रस को जानने वाले प्रेमी जन
त्वदीयम् =	आप के
सुखदम् =	सुख देने वाले
त्रैलोक्यनिर्मलपदम् =	त्रिलोकी में निर्मल अर्थात् सब से अधिक निर्मल पद को)
स्वेच्छाभिकाङ्क्षि॥ः =	अपनी इच्छाकी चाहना
भवन्ति =	कर ते हैं
ते =	वे
निजजाडयविनशहोतोः =	अपनी जडता को विनाश करने के लिए
परेशे =	श्री राम जी में
फलदम् =	(प्रेमा भक्ति रूप) फल को देने वाले
इदम् =	इस
नासाग्रमौक्तिकफलम् =	नासिका के अग्र भाग के मुक्ता फल का
ध्यायन्ति =	ध्यान करते हैं ।

※ नेत्र ※

ज्ञानं निरञ्जनमिदं विवदन्ति ये ते
मुह्यन्ति सूरिनिवहास्तरुणीकटाक्षैः ।

नालोकयन्ति नितरां तव देवितावद्
दीर्घायुषाक्षियुगमञ्जनरंजितं ते ॥३०॥

सान्वयार्थ०

(हे देवि) =	(हे देवी !)
ये =	जो
सूरि निवहाः =	पण्डित समूह
इदम्	यह
निरंजनम् =	निरंजन
ज्ञानम् =	ज्ञान (है ऐसा)
विवदन्ति =	विवाद करते हैं,
ते =	वे
(यावत्)	(जब तक)
अञ्जन रंजितम् =	कज्जल से रंजित
तव =	आपके
अक्षियुगम् =	दोनों नेत्रों को
नितराम् =	पूर्णतया
न =	नहीं
आलोकयन्ति =	अवलोकन करते (अर्थात् आपकी कृपा का आश्रय नहीं लेते)
तावत् =	तबतक
ते =	वे
दीर्घायुषा =	दीर्घायुपर्यन्त (साधन करते हुए भी)

तरुणी कटाक्षैः = तरुणियों के कटाक्ष से
मुह्यन्ति = मोहित होते रहते हैं।

* भौंहें *

भ्रूवल्लरीविलसितं जगदाहुरीशे
व्यासादयो मुनिवरास्तुत एव नित्यम्।
नाशाय तस्य तरुणीतिलके त्वदीया
पाशीकृता हरिमनोमृगबन्धनाय ॥३१॥

सान्वयार्थ०

हे तरुणी तिलके = हे तरुणियों में तिलक स्वरूप अर्थात् शिरोमणी.
हे ईशे = सर्व समर्थ श्री जानकीजी!
व्यासादय = व्यास आदि
मुनिवराः = मुनि श्रेष्ठ
नित्यम् = नित्य
स्तुत एव = स्तुति करते हुए
आहु = कहते हैं (कि)
त्वदीया = आपकी
भ्रूवल्लरी भ्रूवल्लरी
जगत् = जगत् के
विलसितम् = विलास (और)
नाशाय = नाश के लिए (तथा)

हरि मनो मृग वंधनाय =	श्री रामजी के मनरूपी मृग को बांधने के लिए
पाशीकृता =	पाश रूप है।

❊ भाल ❊

भालं विशालमतिसौभगभाजनं ते
सिन्दूरबिन्दुरुचिरद्युतिदीप्तिमन्तम्।
पिण्डीकृतः किमुत राग इतीव तस्मिन्
प्रद्योतते जननि जागतजन्मभाजाम् ॥३२॥

सान्वयार्थ०

हे जननि =	हे माता !
सिन्दूर विन्दु रुचिर द्युति-दीप्तिमन्तम् =	सिन्दूर के बिन्दु की सुन्दर कान्ति से प्रकाशमान
अति सौभग भाजनम् =	अत्यन्त सौन्दर्य का स्थान
ते =	आपका
विशालम् =	विशाल
भालम् =	भाल है,
किमुत =	क्या
जागत जन्म भाजाम् =	संसार में जो प्राणी हैं उनका
रागः =	प्रेम
तस्मिन् =	उस भाल में

पिण्डीकृतः =	इकट्ठा (गोलाकार) हो गया है, (जो)
इतीव =	अत्यन्त
प्रद्योतते =	प्रकाशमान हैं।

* कर्ण *

आदर्शवर्तुलकपोलविलोललोलं
कर्णावतंसयुगलँ जनजाड्यनाशम्।
सूर्यादिकान्तिहरमाश्रयमोजसांते
तीव्रं धिया धरणिजे स्वधियन्तिधीराः ॥२३॥

सान्वयार्थ०

हे धरणिजे =	हे पृथ्वी पुत्री !
धीराः =	धीर पुरुष
आदर्शवर्तुलकपोल विलोललोलम् =	दर्पण केसमान आपके गोल कपोलों में, अतिशय चञ्चल अर्थात् हिलते हुए
जनजाड्यनाशम् =	भक्तों की अज्ञानता को नाश करने वाले
सूर्यादिकान्तिहरम =	सूर्यादि ग्रहों की कान्ति को हरने वाले
ओजसाम =	तेजों के
आश्रयम् =	आश्रय भूत

ते=	आपके
कर्णावतंसयुगलम् =	दोनों कर्ण भूषणों को
तीव्रम् =	तीव्र
धिया =	बुद्धि से
स्वधियन्ति =	ध्यान द्वारा प्राप्त करते हैं।

* कर्ण फूल *

कालोबिभेति जगतामतिभत्त्वकस्ते
जैवातृको भवदसीमगुणो यतो सौ।
सर्वातिवल्लभतया भजनीयरूपे
मन्यामहे हरिरिति श्रुतिभूषसारम् ॥३४॥

सान्वयार्थ०

हेभजनीयरूपे =	हे भजन करने योग्य रूपवाली !
जगताम् =	संसार मात्र का
अतिभत्त्वक: =	अतिभत्त्वक
काल: =	काल
ते =	आपसे
विभेति =	डरता है
यत: =	इससे
असौ =	यह
जैवातृक: =	चन्द्रमा
हरि: =	ताप हरण करने वाला है इस कारण

सर्वातिवल्लभतया =	सबको अति प्रिय होने से
असीमगुणः =	निःसीम गुण वाले
श्रुतिभूषसारम् =	(आपके) श्रवणों का श्रेष्ठ भूषण
अभवत् =	हुआ है
इति =	ऐसा (हम)
मन्यामहे =	मानते हैं ।

❋ केशपाश ❋

सीमन्तमम्बतव सुन्दरतातिसीमं
मुक्ताविभूषितमलं समभागभाजम् ।
निःसीमतापदकृते यतयो यतन्ति
जानीमहे महितवन्दितसीममूर्ते ॥३५॥

सान्वयार्थ०

हेमहितवन्दितसीममूर्ते =	हे पूज्यजनों से वन्दित सीमाभूत मूर्ति,
हेअम्ब =	माता !
समभागभाजम् =	शिर के समभाग स्थान में स्थित
मुक्ताविभूषितम् =	मोतियों से विभूषित
सुन्दरतातिसीमम् =	सुन्दरता की पराकाष्ठा रूप
तव =	आपकी
सीमन्तम् =	मांग (केशपाश) का

यतयः =	सनकादि मुनि श्रेष्ठ
निःसीमता पद कृते =	सीमा रहित स्थान की प्राप्ति के लिए
अलम् =	अतिशय
यतन्ति =	यत्न करते हैं (अर्थात् ध्यान करते हैं)
(इतिवयम) =	(ऐसा हम)
जानीमहे =	जानते हैं ।

* वेणी *

कालाहिभीतिभजतामहिभोगभिन्ना
पायात्परेश्वरिसतामवती सदानः ।
एणीदृशस्तव विशालतरा नुवेणी
दर्भाग्रभागसदृशी सुदृशां त्रिलोक्याः ॥३६॥

सान्वयार्थ०

हेपरेश्वरी =	हे परेश्वरी !
कालाहिभीतिभजताम् =	कालरूपी सर्प के भय से भजन करने वाले
सताम् =	सज्जनों की
अवती =	रक्षा करने वाली
अहिभोगभिन्ना =	सर्प के शरीर सदृश
दर्भाग्रभागसदृशी =	दर्भ के अग्र भाग के समान

त्रिलोक्याः = त्रिलोकीकी
सुदृशाम् = सुंदर नेत्र वाली (देवियों के मध्यमें)
एणीदृशः मृगी के समान नेत्र वाली
तव = आपकी
विशाल तरानुवेणी = अति विशाल बेणी
नः = हमारी
सदा = सदा
पायात् = रक्षा करे

* साड़ी *

साटी सुसूक्ष्मतरातिगतानि नीला
सौवर्ण सूत्र कलिता कृपया वृताते
भर्तुः स्वरूपमनुभावयतां जनानां
प्रीत्यै करोषि परदेवि यदापिधानम् ॥३७॥

सान्वयार्थ०

हे परदेवि = हे परदेवि !
भर्तुः = अपने भर्ता श्री रामजी के
स्वरूपम् = स्वरूप के
अनुभावयताम् = भजन करनेवाले
जनानाम् = जनों की
प्रीत्यै = प्रीति के लिए
अपिधानम् = (जिसको आप) धारण

करोषि =	करती हो,
सा =	वह
साटी =	साढ़ी
ते =	आपकी
कृपया वृता =	कृपा से पूर्ण है (और)
सौवर्णसूत्रकलिता =	सुवर्ण सूत्र से रचित है,
अतिनीला	अतिनील है (तथा)
सुसूक्ष्मतर तिगता =	सूक्ष्मतरता को अतिक्रमण कर गई है। (अर्थात् अतिझीनी है)

※ स्वरूप वर्णन ३८ से ५३ ※

पारे गिरां गुणनिधे ! श्रुतयो वदन्ति
रूपं त्वदीयमपरं मनसोप्यगम्यम्।
साक्षात् कथं सरसिजाक्षि भवेद्गते ते
बुद्धौ कृपामनु कृशोदरि मादृशां तत् ॥३८॥

सान्वयार्थ०

हे गुणनिधे =	हे गुणनिधे
हे सरसि जाक्षि =	कमल नयनी
हे कृशोदरि =	कृशोदरी !
श्रुतयः =	वेद
त्वदीयम् =	आपके
अपरम् =	अपर
रूपम् =	रूपको

गिराम् =	वाणी से
पारे =	पर (और)
मनसः =	मनसे
अपि =	भी
अगम्यम् =	अगम्य
वदन्ति =	कहते हैं
तत् =	वह रूप
ते =	आपकी
कृपाम् =	कृपा के
ऋते =	विना
मादृशाम् =	हम जैसों की
बुद्धौ =	बुद्धि में
कथम् =	कैसे
साक्षात् =	साक्षात
अनुभवेत् =	अनुभव को प्राप्त हो सकता है।

किं चित्रमत्र जननि ! प्रभया प्रकाश्यं
विश्वं वदन्ति मुनयस्तव देवि ! देवाः ।
जाताश्रयस्त्रिभुवनैर्गुणतोभिवन्द्य
स्त्राणादिकर्म विभवं परमस्य यस्याः ॥३६॥

सान्वयार्थ०

हे देवि =	हे देवी (श्री जनक नन्दिनी
हे जननि =	माता !

मुनयः =	मुनिगण (और)
देवाः =	देवगण
विश्वम् =	विश्वको
तव =	आपकी
प्रभया =	कान्ति से
प्रकाश्यम् =	प्रकाशित
वदन्ति =	कहते हैं
अस्य =	इस विश्व के
त्राणादि कर्म =	रक्षणादि कर्मको
यस्याः =	जिन (श्री जानकीजी) का
परम् =	सर्वोत्कृष्ट
विभवम् =	वैभव बतलाते हैं
(तदा) =	तब
जाताश्रयः =	आपका आश्रय लेने वाला जन
गुणतः =	उत्तमोत्तम गुणों से
त्रिभुवने =	तीनों लोकों में
अभिवन्द्यः =	सब प्रकार वंदनीय हो
अत्र =	इसमें
किम् =	क्या
चित्रम् =	आश्चर्य है।

वेदास्तवाम्ब ! विवदन्ति निजस्वरूपं
नित्यानुभूतिभवभावपराः परेशैः ।

निर्णेतुमद्य यतयस्तपसा यतंते
बोधाय पादसरसीरुहयुग्मभृङ्गाः ॥४०॥

सान्वयार्थ०

हे अम्ब =	हे माता !
वेदा =	वेद
परेशैः =	ईश्वरों के सहित
नित्यानुभूतिभवभावपरा =	आपकी नित्य अनुभूति से उत्पन्न हुए भाव में परायण होकर
तव =	आपके
निजस्वरुपम् =	निज स्वरुप का
निवदन्ति =	वर्णन करते हैं
तत् =	उसी स्व रूप के
बोधाय =	ज्ञानार्थ
निर्णेतुम =	निर्णय के लिए
यतयः =	मुनि श्रेष्ठ
पादसरसीरूहयुग्मभृङ्गाः =	दोनों चरण कमलों के भृङ्ग होकर
अद्य =	आज पर्यन्त
तपसा =	तपके द्वारा =
यतन्ते =	यत्न करते हैं (अर्थात् ध्यान करते हैं)

जातं त्वदेव नितरां जगतां निदानं
मन्यामहे तदिदमम्ब ! कृतं श्रुतीनाम् ।
सर्वं यतः खलु विचेष्टितमाशु शक्तेः
कार्यं हि कारणगुणानवलम्ब विद्यात् ॥४१॥

सान्वयार्थ०

हे अम्ब =	हे माता !
जगताम् =	लोकों का
नितराम् =	अत्यन्त
निदानम् =	आदि कारण (महत्तत्व दिक)
त्वत् =	आपसे
एव =	ही
जातम् =	उत्पन्न हुआ है
तदिदम् =	इस प्रकार यह
श्रुतिनाम =	श्रुतियों का
कृतम् =	अभिप्राय
मन्यामहे =	हम मानते है,
सर्वंखलु =	यह सम्पूर्ण जगत्
शक्तेः =	शक्ति का ही
आशु =	शीघ्र
विचेष्टितम =	चेष्टा रूप है
यतः =	क्योंकि
हि =	निश्चय ही

कार्यम् =	कार्य
कारण गुणान् =	कारण के गुणों को
अवलम्ब विद्यात् =	अवलम्बन करके स्थित होता है।

जानीमहे जननि ! ते नयनारविन्द
स्योन्मीलनेऽजनि जगत् क्षय तन्निमीलात्।
वैषम्यशून्यसमतां समुपागते य
त्स्यादस्य पालनमसंशयमस्य नूनम् ॥४२॥

सान्वयार्थ०

हे जननि =	हे माता श्री जानकी जी !
ते =	आपके
नयनारविन्दस्य =	नयनारविन्द के
उन्मीलने =	खोलने से
जगत् =	संसार
अजनि =	उत्पन्न होता है.
तत् =	उनके
निमीलात् =	बन्द करने से
अस्य =	इस (संसार) का
क्षयम् =	नाश
स्यात् =	होता है (और)
यत् =	जिनके
वैषम्यशून्य समताम् =	खुलने और बन्द होने की क्रिया विरत हो कर एक समता

समुपागते सति =	प्राप्त होने पर
अस्य =	इस (संसार) का
असंशयम् =	निस्सन्देह
पालनम् =	पालन होता है,
इति =	ऐसा
नूनम् =	निश्चयही
जानीमहे =	हम जानते है।

ज्ञातंत्वदीयमपरं चरितं विशालं
भावंभवे ननुनिजे प्रकटीकरोषि।
प्रेम्णैव तैः प्रथमतः परमानुभावं
भाव्यं पदाब्जमनिशं स्वजनैरतस्ते ॥४३॥

सान्वयार्थ०

(हे देवि) =	(हे देवी)
त्वदीयम् =	आप का
अपरम् =	और भी
चरितम् =	चरित्र
ज्ञातम् =	हम जानते है
ननु =	निश्चय कर के
निजे =	आप अपने
भवे =	चिन्मय स्वरूप में

विशालम् =	महा
भावम् =	भाव
प्रकटी करोषि =	प्रकट करती है
अतः =	इस कारण
तेः =	उन
स्व जनैः =	भक्तो द्वारा
प्रथमतः =	पहले हि से
परमानु भावम् =	परम प्रकाश वाले
ते =	आप के
पदाब्जम् =	चरण कमल
अनिशम् =	निरन्तर
प्रेम्णैव =	प्रेम सेही
भाव्यम् =	भावना किए जाते हैं।

येषामदः परमवस्तु च तज्जनानां
प्रद्योतते जनकजाचरणारविन्दम् ।
सर्वं समीक्ष्य इह कर्ममनोवचोभि-
र्ब्रह्मस्वरूपमतिदुर्लभतानुसेव्यम् ॥४४॥

सान्वयार्थ०

(हेदेवि) =	(हे देवी !
येषाम् =	जिन भक्तों को
अदः	यह

जनकजा चरणार विन्दम् =	श्री जानकीजी के चरणार विन्द ही
परम वस्तु =	परम पुरुषार्थ रूप
प्रद्योतते =	प्रकाशित होते हैं
तज्जनानाम् =	उन भक्तों को
इह =	इस संसार में
कर्म मनोवचोभिः =	कर्म, मन, वचन द्वारा
सर्वम् =	सब
समीक्ष्य =	देखकर
अति दुर्लभतानु सेव्यम =	अति दुर्लभलता से सेवन करने योग्य
ब्रह्म स्वरुपम् =	ब्रह्म का स्वरूप
भाति =	प्रतीत होता है।

किं दुर्लभं चरणपङ्कजसेवया ते
पूर्णा रमन्ति रमणीयतया त्रिलोकयाम् ।
वस्तु प्रकाशविशदं हृदये त्वदीयं
तेषामहो किमुत साधनकोटियत्नैः ॥४५॥

सान्वयार्थ०

(हे देवि =)	(हे देवी !)
ते =	आपके
चरण पङ्कज सेवया =	चरण कमलों की सेवा करने से

किम् =	क्या
दुर्लभम् =	दुर्लभ है
(तव भक्ताः) =	(आपके भक्त लोग)
रमणीयतया =	सेवा कार्य से
पूर्णारमन्ति =	पूर्णरुप से रमण करते हैं
(येषाम् =)	(जिनके)
हृदये	हृदय में
प्रकाश विशदम् =	स्वच्छमय प्रकाश स्वरुप
वस्तु =	वस्तु
त्वदीयम् =	आपके चरणार विन्द है,
अहो =	अहा
तेषाम् =	उन भक्तों को
साधन कोटियत्नैः =	करोड़ों साधनों के प्रयत्नों से
किमुत =	क्या प्रयोजन है ।

धन्यास्त एव तव देवि पदारविन्दं
स्यन्दायमानमकरन्दमहर्निशं ये ।
भृङ्गायमानमनसो नितरां भजन्ते
भावाववोधनिपुणाः पर देवता याः ॥४६॥

सान्वयार्थ०

हे देवि =	हे देवी !
भावाववोधनिपुणाः =	भाव के परिज्ञान में निपुण
ये =	जो भक्त

पर देवतायाः =	सर्वोत्कृष्ट देवतारूप
तव =	आपके
स्यन्दायमान मकरन्दम् =	बहते हुए चिन्मय मकरन्द वाले
पादार विन्दम् =	चरणारविन्दों को
अहर्निशम् =	रातदिन
भृङ्गायमानमनसा =	अपने मनको भ्रमर बनाते हुए
नितराम् =	पूर्णतया
भजन्ते =	सेवन करते हैं,
ते एव =	वे ही
धन्याः	धन्य हैं ।

पादाब्जरागपरिरञ्जितचित्तभृङ्गो
येषां समीक्ष्य इह जातमिदं स्वरूपम् ।
तेषां न किं प्रवदते परितो वरिष्ठं
साध्यं भवेदिह परत्र न किञ्चिदन्यत् ॥४७॥

सान्वयार्थ०

(हे देवि) =	(हे देवी !)
इदम =	इस (ध्यानगम्य) प्रकट हुए
स्वरूपम् =	स्वरूप को
समीक्ष्य =	देख कर
इह =	इस भूलोक पर
येषाम् =	जिन भक्तों का

पादाब्जराग परि रञ्जित

चित्तभृङ्गः =	चित्त रूपी भ्रमर आपके चरण कमलों के अनुराग से पूर्णतया रञ्जित
जातम् =	हो गया है,
तेषाम् =	उन भक्तों को
परितोवरिष्ठम् =	इससे अधिक श्रेष्ठ
किम् =	कौन
न =	नहीं
प्रवदते =	बता सकता है ?
(पुनः ते षाम्) =	(फिर उन भक्तों के लिए)
इह =	इस लोक (और)
परत्र =	परलोक में
अन्यत =	दूसरी
किञ्चित् =	कुछ भी (साध्य वस्तु)
न =	नहीं हैं ।

चुम्बन्ति चिद्धनमहो मकरन्दमस्या
देवैर्मुनीन्द्रनिचयैरतिदुर्लभं ते ।
पादाब्जयोरतिविकाशविलासवोध
स्यादेव देवि तवकान्तनिजस्वरूपे ॥४८॥

सान्वयार्थ०

हे देवि =	हे देवी !

(ये)=	(जो भक्त)
देवैः=	देवता (तथा)
मुनीन्द्रनिचयैः=	मुनीन्द्र समूह को
अतिदुर्लभम्=	अति दुर्लभ
अस्यास्ते=	इन आप श्री जानकीजी के
पादाब्जयोः=	चरणार विन्दों के
चिद्घनम्=	चिद्घन
मकरन्दम्=	मकरन्द को
चुम्बन्ति=	पान करते हैं
(तेषाम्)=	(उन भक्तों को)
तवकान्तनिजस्वरूपे=	आपके कान्त श्री रामजी के निज स्वरूप में
अतिविकाशविलासबोध=	अत्यन्त प्रकाश युक्त विलास का बोध
स्यादेव=	होता ही हैं ।

यावन्न ते सरसिजद्युतिहारिपादे
नस्याद्रतिस्तरुनवाङ्कुरखण्डिताशे ।
तावत्कथं तरुणिमौलिमणे जनानां
ज्ञानं दृढंभवति भामिनी रामरूपे ॥४६॥

सान्वयार्थ०

हे तरुणिमौलिमणे=	हे तरुणियों में शिरोमणी
हे भामिनि=	भामिनी !

यावत् = जब तक
ते = आपके (इन)
तरूनवाङ्कुरखण्डिताशे = वृक्षों के नवीन अङ्कुर की शोभा को खंडन करने वाले (तथा)
सरसिजद्युतिहारिपादे = कमल की शोभा को हरण करने वाले चरण कमलों में
रति: = प्रेम
न = नहीं
स्यात् = हो
तावत् = तब तक
जनानाम् = भक्तों को
रामरूपे = श्री राम रूपमें
दृढम् = दृढ
ज्ञानम् = ज्ञान
कथम् = कैसे
भवति = हो सकता है ।

साक्षान्तपोव्रतयमैर्नियमैः समीहे
त्कर्तुं कृपामृतमिहप्रसभंस्वरूपम् ।
नाथस्यते श्रुतिवचो विषयंकथंस्या
न्मूढो वृथोत्सृजति देवि सुखान्यमूनि ॥५०॥

सान्वयार्थ०

हे देवि = हे देवी ।

श्रुतिवचोविषयम् = वेद वचनों के अविषय अर्थात् वेद वचन भी जहां नहीं पहुंच सकते हैं ऐसे
कृपामृतम् = कृपामृत से पूर्ण
ते = आपके
नाथस्य = स्वामी श्रीरामजी के
स्वरूपम् = स्वरूप को
इह = इस संसार में
तपोव्रतयमैः = तप व्रत यम (तथा)
नियमैः = नियमों द्वारा
प्रसभम् = बलात्कार से
साक्षात्कर्तुम् = प्रत्यक्ष करने के लिए
समीहते = चेष्टा करता है
मूढः = वह मूर्ख
अमूनि = यहां के
सुखानि = सुखों को
वृथा = व्यर्थ ही
उत्सृजति = छोडता है (स्वरूप दर्शन आपकी कृपा के बिना)
कथम् = कैसे
स्यात् = हो सकता है।

योगाधिरूढमुनयो हरिपादपद्मे
ध्यायन्ति ये चरणपङ्कज युग्ममन्तः।

वाञ्छन्ति विघ्न शततोप्यनिवार्यमाणां
भक्तिं भवाब्धि तरणाय कृपा पयोधे ॥५१॥

सान्वयार्थ०

हे कृपानिधे =	हे कृपा के समुद्र श्री जानकीजी !
ये =	जो
योगाधिरूढ़मुनयः =	योग में तत्पर मुनि लोग
भवाब्धितरणाय =	संसार समुद्र को पार करने के लिए
हरिपादपद्मे	भगवान् श्री राम के चरण कमलों में
विघ्नशततः =	सैकड़ों विघ्नों से
अपि =	भी
अ।निवार्यमाणाम् =	निवारण नहीं की जाने वाली
भक्तिम् =	भक्ति को
बाञ्छन्ति =	चाहते हैं,
(ते) =	(वे भक्त)
तव =	आपके
चरणपङ्कजयुग्मम् =	दोनों चरण कमलों का
अन्तः =	अन्तः करण में
ध्यायन्ति =	ध्यान करते हैं ।

चार्वङ्गिते चरणचारणवन्दिसङ्गं
मह्यं विदेह तनये परिदेहि नान्यम् ।

याचे वरं वरविदां वरदे भवत्या
येनामुना तव धवे मम रञ्जना स्यात् ॥५२॥

सान्वयार्थ०

हेवरविदाम् =	हे श्रेष्ठ ज्ञानियों को
वरदे =	वरदान देने वाली
हेचार्वङ्गि =	सुन्दराङ्गी
होविदेहतनये =	श्री जानकी जी !
चरणचारणवन्दि सङ्गम् =	चरण सेवा करने वालों को प्रणाम करने वाले अर्थात् भक्तों के भक्तों का संग
मह्यम् =	मुझे
परिदेहि =	दान करिए ।
येन =	जिस
अमुना =	इस (संग) से
तव =	आपके
धवे =	स्वामी श्रीराम में
मम =	मेरी
रञ्जना =	अनुरक्ति
स्यात् =	होवे ।
भवत्या =	आपसे
अन्यम् =	और कोई दूसरा
वरम् =	वर

न = नहीं
याचे = मांगता हूं ।

याचे हमम्ब रघुनन्दनमूर्तिभावं
सार्द्धं त्वयातिदृढमञ्जलिनाविशेषम् ।
त्वं देहि वेत्तृवरदे मुनिसंघमुख्या
मन्यन्तिवल्लभतरां स्वपतेभवन्तीम् ॥५३॥

सान्वयार्थ०

हे अम्ब = हे माता !
अहम् = मैं
त्वया = आपके
सार्द्धम् = साथ
अविशेषम = विशेष रहित (अर्थात् न्यूनाधिकता रहित
अतिदृढम् = अतिदृढ
रघुनन्दनमूर्तिभावम् = श्री रघुनन्दन के स्वरूप में भाव (अत्यन्त प्रेम) को
अञ्जलिना = अञ्जलिवद्ध होकर
याचे = मांगता हूँ ।
हे वेत्तृवरदे = सर्वज्ञों को वरदान देने वाली !
त्वम = आप (यह)
देहि = दीजिये
मुनिसंघमुख्याः = मुनि समूहों में जो मुख्य है (वे)

भवन्तीम = आपको
स्वपतेः = अपने पति श्री रामचद्रजी की
वल्लभतराम् = अतिवल्लभा
मन्यन्तिः = मानते हैं।

* उपसंहार ५४ से ६० *

एवं स्तुत्वा परं रूपं जानक्या जाड्य नाशनम् ।
उपरराम शन्तात्मा योगेश्वरः सदाशिवः ॥ ५४ ॥
निरीक्ष्य तन्मुखाम्भोजं भावयन् रूपमद्भुतम् ।
कांदं स्तस्याः परांभक्तिं पादपङ्कजयोर्दृढाम् ॥ ५५ ॥

योगेश्वरः = योगेश्वर
शान्तात्मा = शन्तस्वरूप
सदाशिवः = श्री सदाशिवजी
जाड्य नाशनम् = जडता (अज्ञान) को नाश करनेवाले
श्रीजानक्या = श्री जान की जी के
परम् = पर (सर्वोत्कृष्ट)
रूपम् = रूपको
एवम् = इस प्रकार
स्तुत्वा = स्तुति करके
तन्मुखाम्भोजम् = उनके मुख कमल को
निरीक्ष्य = देखकर
अद्भुतम् = अद्भुत
रूपम् = रूपकी

भावयन् =	भावना करते हुए (तथा)
तस्याः =	उनके
पदपङ्कजयोः =	चरण कमलों में
दृढाम् =	दृढ (और)
पराम् =	परा
भक्तिम् =	भक्ति की
कांक्षन =	इच्छा करते हुए।
उपारराम =	उपराम को प्राप्त हुए।

उवाच तं वरारोहा जानकी भक्तवत्सला।
एवमस्तु महादेव यत्त्वयोक्तं च नान्यथा ॥ ५६ ॥

भक्तवत्सला =	भक्तवत्सला
वरारोहा =	परम सुन्दरी
जानकी =	श्री जानकीजी
तम् =	उन श्री शिवजी को
उवाच =	कहा
हे महादेव =	हे महादेवजी
त्यत् =	जो
वया =	आपने
उक्तम् =	कहा है,
एवम् =	वैसाही
अस्तु =	हो
अन्यथा =	इसके विपरीत
न =	नहीं।

अन्यत्ते कांक्षितं ब्रूहि दास्यामि देवदुर्लभम् ।
सत्यां मयि कृपोन्मुख्यां न किञ्चिन्तस्य दुर्लभम् ॥५७॥

सान्वयार्थ०

ते=	आपका
अन्यत्=	और जो
कांक्षितम्=	इच्छित हो (वह)
ब्रूहि=	कहो।
देवदुर्लभम्=	देवदुर्लभ (वस्तु भी)
दास्यामि=	दूंगी
मयि=	मेरे
कृपोन्मुख्याम्=	प्रसन्न
सत्याम्=	होने पर
तस्य=	उस पुरुष के
किञ्चित्=	कुछ भी
दुर्लभम्=	दुर्लभ
न=	नहीं है।

प्रसन्नवदनां दृष्ट्वा सोपि देवशिरोमणिः ।
ययाचे वरमात्मीयं रहस्यं भावबोधकः ॥५८॥

सान्वयार्थ०

देव शिरोमणिः=	देवताओं में मुख्य
स=	श्री शिवजी ने

अपि =	भी
प्रसन्नवदनाम् =	प्रसन्न मुख उन श्री जानकीजीको
दृष्ट्वा =	देख कर
आत्मीयम् =	अपने
भावबोधकम् =	अभिप्राय को प्रकट करने वाले
रहस्यम् =	रहस्य (एकान्त उपासना) का
वरम् =	वरदान
ययाचे =	मांगा।

प्रादात्तस्मै वदान्या सा यद्यन्मनसि कांङि्क्षतम्।
वरं-वरेश्वरी साक्षात्पुनरुवाच सा हितम् ॥ ५६ ॥

वदान्या =	परम उदार
सा =	उन श्री जानकीजी ने
तस्मै =	श्री शिवजी के लिए
यत्-यत् =	जो-जो
मनसि =	मन में
कांङि्क्षतम् =	इच्छित था
(तत्-तत्) =	(वह-वह)
वरम् =	बरदान
प्रादात् =	दिया
पुनः =	फिर
साक्षात् =	साक्षात्
वरेश्वरी =	वरदान देने में समर्थ (श्रीजानकीजीने)

हि= निश्चय कर के
तम्= उन श्री शिवजी को
उवाच= कहा

अयंपवित्रमौलिर्मे स्तवराजः त्वयाशिव ।
प्रकाशितोति गोप्योपि मत्प्रसादात्सुरोत्तम ॥६०॥

हे सुरोत्तम= हे देव श्रेष्ठ,
हे शिव= शिवजी ।
पवित्रमौलि= पवित्रों में शिरोमणि
अतिगोप्यः= अत्यन्त गोपनीय
अपि= भी
अयम्= यह
मे= मेरा
स्तवराजः= स्तवराज
मत्प्रसादात्= मेरी कृपा से
त्वया= आपने
प्रकाशितः= प्रकाशित किया है ।

*** फल श्रुति निष्काम भाव से ***

यः पठेदिदमग्रे मे पूजाकाले प्रयत्नतः ।
तस्ये हा मुत्र किञ्चिन्न वस्तुस्याद्दृगगोचरम् ॥६१॥

सान्वयार्थ०

पूजाकाले= पूजा के समय

यः=	जो पुरुष
मे=	मेरे
अग्रे=	आगे
इदम्=	इस स्तवराज का
प्रयत्नतः=	प्रयत्न से
पठेत्=	पाठ करे
तस्य=	उस पुरुष के
इह=	इस लोक में (और)
अमुत्र=	पर लोक में
दृग्गोचरम्=	दृष्टि का विषय नहो (ऐसी)
किञ्चित्=	कोई
वस्तु=	वस्तु
न=	नहीं है।

* फलश्रुति-सकाम भाव से *

धनं धान्यं यशः पुत्रानैश्वर्यमति मानुषम् ।
प्राप्येहामोदते भूयो मत्पदं तद्व्रजेत्सह ॥ ६२ ॥

सान्वयार्थ०

धनम्=	धन को
धान्यम्=	धान्य को
यशः=	यश को
पुत्रान्=	पुत्रों को
अति मानुषम्=	सब मनुष्यों से अधिक हो ऐसे,

ऐश्वर्यम् = ऐश्वर्य को
इह = इस संसार में
प्राप्य = प्राप्त होकर
मोदते = प्रसन्न होता है ।
भूयः = फिर
स = वह
ह = स्पष्ट रूप से
तत् = उस
मत्पदम् = मेरे पद को
व्रजेत = जाता है ।

यद्यल्लोकोत्तरं वस्तु त्रिषु लोकेषु दृश्यते ।
तत्सर्वमस्य पाठेन प्राप्नुयाद्भुविमानवः ॥६३॥

सान्वयार्थ०

त्रिषु = तीनों
लोकेषु = लोकों में
यत्-यत् जो-जो
लोकोत्तरम् = अलौकिक
वस्तु = वस्तु
दृश्यते = दिखाई देती है
तत्सर्वम् = वह सब
अस्य = इसके
पाठेन = पाठ से

भूवि =	पृथ्वी पर
मानवः =	मनुष्य को
प्राप्नुर्यात =	प्राप्त हो सकती है।

* आज्ञा *

इदं मे परमैकान्तं रहस्यं सुरसत्तम।
न प्रकाश्यं त्वया शम्भो शठाय भावद्वेषिणे ॥६४॥

सान्वयार्थ०

हे सुरसत्तम =	हे देव श्रेष्ठ
हे शम्भो =	शिवजी !
इदम् =	इस
मे =	मेरे
परमैकान्तम् =	अत्यन्त गोपनीय
रहस्यम् =	रहस्य को
भावद्वेषिणे =	भाव दूषित
शठाय =	मूर्ख के प्रति
त्वया =	तुम
न =	नहीं
प्रकाश्यम =	प्रकाशित करना।

भक्तिर्यस्यातिदेवेशे सर्वैश्वर्यै तथा मयि।
गुरौ सर्वात्म भावेन विद्यतेभक्तिरुत्तमा ॥ ६५ ॥
तस्मै देयंत्वया शम्भो भाव नार्द्र हृदे गुरौ।
सव भूत हितार्थाय शाताय सौम्यमूर्तये ॥६६॥

सान्वयार्थ०

त्वया=	तुम
यस्य–	जिस पुरुष की
सर्वैश्वर्ये=	सबऐश्वर्यों से युक्त
देवेशे=	देवताओं के स्वामी श्रीरामजी में
तथा=	उसी प्रकार
मयि=	मुझमें
सर्वात्मभावेन=	सर्वात्म भाव से
भक्तिः=	भक्ति
स्यात्=	हो (और)
गुरौ=	गुरु में
उत्तमा=	उत्तमा
भक्तिः=	भक्ति
विद्यते=	विद्यमान हो (ऐसे)
सौम्यमूर्तये=	सौम्यमूर्ति
शान्ताय=	शान्त स्वरूप
सर्वभूतहितार्थाय=	सर्व प्राणियों के हित में परायण
गुरौ=	श्री गुरु में
भावनार्द्रहृदे=	भावनायुक्त प्रेमार्द्र हृदय वाले
तस्मै=	उस भक्त के लिए
देयम्=	देना।

इत्युक्त्वा भावनामूर्तिः सीता जनक नन्दिनी ।
कृपापात्राय तस्मै सा पुनः प्रादाद्वरान्तरम् ॥६७॥

सान्वयार्थ०

भावनामूर्ति =	ध्यानमें प्राप्त हुई है मूर्ति जिनकी ऐसी
सा =	उन
जनकनन्दिनी =	जनक पुत्री
सीता =	श्री सीताजी ने
कृपापात्राय =	कृपा पात्र
तस्मै =	उन श्री शिवजी के लिए
इत्युक्त्वा =	ऐसा कह कर
पुनः =	फिर
वरान्तरम् =	और भी बरदान
प्रादात =	दिया ।

सर्वदुःखप्रशमनं जानक्यास्तु प्रसादतः ॥६८॥

सान्वयार्थ०

तु =	फिर
जानक्याः =	श्री जानकी जी की
प्रसादतः =	कृपासे
सर्व दुःख प्रशमनम् =	सब दुःख विलीन
अभूत =	हुए ।

॥ शुभम् ॥

❀ अनुवादकर्तुः—परिचयादि ❀

अङ्गाम्बरवियत्पक्षमिते (२००६) वैक्रमहायने ।
माधवे धवले पक्षे नवम्यां मन्दवासरे ॥
जयपत्तनराज्यस्थ–बधालग्रामवासिना ।
'सन्त' गोविन्ददासेन वृद्धिचन्द्रात्मजन्मना ॥
त्रिपुष्करसमीपस्थाजयमेर्वाख्यपत्तने ।
विश्वम्भरप्रसादस्य निदेशेन विनिर्मिता ॥
जानकीस्तवराजस्य 'सान्वयार्थप्रकाशिनी'
व्याख्या विजयतां सैषा जानकीचरणार्पिता ॥

श्रीकिशोरीजी का चरमशरणागत मंत्र

ॐ कृपारूपिणिकल्याणि रामाप्रिये श्रीजानकी।
कारुण्यपूर्णनयन दयादृष्ट्यावलोकय ॥

श्रीकिशोरीजी का व्रत

पापानां वा शुभ नां वा वधार्हाणां सवङ्गम।
कार्यं करुणमार्येण न कश्चिन्नापराध्यति॥

अथ शरणागति-पञ्चक

ॐ सर्व जीव शरण्ये श्री सीते वात्सल्य सागरे।
मातर्मैथिलि सौलभ्ये रक्ष मां शरणागतम् ॥१॥
ॐ कोटि कन्दर्प लावण्यां सौन्दर्य्यैक स्वरूपताम्।
सर्व मङ्गल माङ्गल्यां भूमिजां शरणं व्रजे ॥२॥
ॐ शरणागत दीनार्त परित्राण परायणाम्।
सर्वस्यार्ति हरेणैक धृतव्रतां शरणं व्रजे ॥३॥
ॐ सीतां विदेह तनयां रामस्य दयितां शुभाम्।
हनुमता समाश्वस्तां भूमिजां शरणं व्रजे ॥४॥
ॐ अस्मिन् कलिमला कीर्णे काले घोर भवार्णवे।
प्रप न्नानां गतिर्नास्ति श्रीमद्राम प्रियां विना ॥५॥

अथ श्रीराम वल्लभाध्यानस्तवम् ॥

रामां राजीवनयनां रामवक्षस्थलालयाम्।
रामाङ्कपीठे राजन्तीं वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥१॥
विदेह तनयां देवीं मन्दस्मित मुखाम्बुजाम्।
इन्दीवर विशालाक्षीं वन्दे श्रीराम वल्लभाम् ॥२॥

दिव्यमालाम्बरधरां तप्तचामीकरप्रभाम ।
चारु चन्द्राभवदनीं वन्दे श्रीराम वल्लभाम् ॥३॥
पद्म लयां पद्महस्तां पद्मपत्रनिभेक्षणाम ।
पद्मालयां पद्मगंधां वन्दे श्रीराम वल्लभाम् ॥४॥
हेमपद्म समासीनां नीलकुञ्चित मूर्द्धजाम ।
तरुणादित्य संकाशां वन्दे श्रीराम वल्लभाम् ॥५॥
विद्युत्पुञ्जप्रभाभासां सुरासुरनमस्कृताम् ।
त्रयीमयीं सूक्ष्म रूपां वन्दे श्रीराम वल्लभाम् ॥६॥
चन्द्रमण्डलमध्यस्थां चन्द्रबिम्बनेपमाननाम ।
चन्द्रकोटि प्रभां देवीं वन्दे श्रीराम वल्लभाम् ॥७॥
आदिमध्यान्तरहितांअम्भोरुहनिवासिनीम् ।
नादब्रह्ममयीं देवीं वन्दे श्रीराम वल्लभाम् ॥८॥
यक्ष किन्नर गन्धर्व सिद्ध विद्या धरैः सदा ।
सेव्यमान पदांभोजां वन्दे श्रीराम वल्लभाम् ॥९॥
ब्रह्मेन्द्र वन्दित पदां सृष्टिस्थित्यन्तकारिणीम् ।
परानन्दमयीं रम्यां वन्दे श्रीराम वल्लभाम् ॥१०॥

॥ श्री जानकी गायत्री ॥

ॐ जनक नन्दिन्यै विद्महे श्रीरामवल्लभायै धीमही
तन्नः सीता प्रचो दयात् ॥

॥ श्री सीतारामाभ्यां नमः ॥

श्री सीता कवचम्

श्रीलक्ष्मण उवाच—

कृताञ्जालि पुटो भूत्वा नत्वा शिरसिलक्ष्मणः ।

उवाच परमंदिव्यं सीतायाः कवचंपरम ॥१॥
त्वत्तःश्रोतुमिच्छामि त्रैलोकय मोहनंमहत ।
कथयस्व रघुश्रेष्ठ दिव्यं कवचमुत्तमम् ॥२॥

श्रीरामउवाच—

शृणुवत्स महादिव्यं महामङ्गल दायकम् ।
महासिद्धिकरं पुंसां महा सम्पत्ति दायकम् ॥३॥
त्रैलोक्य मोहनंन म कवचं परमाद्भुतम ।
यः पठेत्सततंभक्तया अपुत्रः पुत्रवान्भवेत् ।४॥
अष्टाक्षरं महामन्त्रं पठेत्कवचसंयुतम ।
ततः सिद्धिमवाप्नोति अकीलमतुलंवरम ॥५॥
ॐ अस्य श्री सीता त्रैलोक्य मोहन कवच मन्त्रस्य
श्रीराम ऋषि रनुष्टुपछन्दः श्रीसीता देवता
श्री सीता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

ध्यानम्—

नीलाम्भोजदलाभिराम नयनां नीलाम्बरालंकृतां
गौराङ्गीशरदिन्दु सुन्दरमुखीं विस्मेरविम्बधराम् ।
कारुण्यामृतवर्षिणीं हरिहरं ब्रह्मादिभिर्वदितां
ध्यायेद्भक्तजनेप्सितार्थफलदां रामप्रियां जानकीम् ॥१
ॐ शिरो मे भूभवा पातु ललाटे जन कात्मजा ।
नेत्रेपातु कुजाचैव वैदेहिश्रुतिरक्षिणी ॥२॥
जीह्वांमेंजानकीपातु ग्रीवां जनकनन्दिनी ।
स्कन्धौपातु महामाया भुजौ पातु सुलोचना ॥३॥
करौ पातु सदा सीता उरूमे रामपार्श्वगा।

मध्यं पातु च पद्माक्षि नाभिं मे वनवासिनी ॥४॥
कटिंयोगेश्वरी पातु सक्थिनी मृगध्वंसिनी।
उरूमेउर्वशी पातु जानुनी भिल्लमोक्षिणी ॥५॥
जङ्घे वालिप्रमथिनीं द्विपादौ रावणान्तिनी।
सर्वाङ्गं पातु स्वच्छाङ्गी सदा पातु प्रवोधिनी ॥६॥
विभीषणश्रीदापातु सद्यश्चैव दिशो दश।
सीतायाः कवचंह्येतद्देवानामपि दुर्लभम् ॥७॥
त्रैलोक्य मोहनंनाम त्रैलोक्य धन दायकम्।
यः पठेत्तुममाग्रैव पूजाकाले प्रयत्नतः ॥८॥
सौमित्रैच शृणुष्वत्वं ददामि वाञ्छितं फलम् ॥

॥ श्री जनकनन्दिन्यै नमः ॥

श्री जानकी कवचम्

श्री धरण्युवाच—

देव देव कृपासिन्धो ! कथयानुग्रहान्मयि।
जानकी कवचं दिव्यं सर्व पाप भयापहम् ॥१॥

श्री शेष उवाच—

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि गुह्यानां गुह्यमुत्तमम।
जानक्याः कवचं पुण्यं पठतां पाप नाशनम् ॥२॥
ध्यात्वा चम्पकवर्णाभां कोमलाङ्गि सरोरुहाम्।
बालातपाभवसनां करभप्रतिमोरुकाम् ॥३॥
पूर्णचन्द्राभवदनां नीलकुञ्चित कुन्तलाम्।
मणिकङ्कण सौन्दर्य विलसत्करपल्लवाम् ॥४॥

सर्वसद्गुण सम्पन्नां हेमकुम्भलसत्कुचाम् ।
आजानुविन्यस्तभुजां करपद्मधृताम्बुजाम् ॥५॥
कीरीटहारकैयूर मुक्ताभूषणभूषिताम् ।
रत्नसिंहासनगतां देवस्त्रिगण सेविताम् ॥६॥
श्रीरामवामभागस्थां तप्तचामीकर प्रभाम् ।
सीतां ततः पठेत्पुण्यं कवचं पापनाशनम् ॥७॥
श्रीसीताकवचस्यास्य शेषऋषिरुदाहृत ।
वीजंवागनुष्टुपूछन्दो देवता जनकात्मजा ॥८॥
सीता रक्षतु मुर्धानं नयनेजानकीमम ।
श्रीरामचन्द्र दयिता कपोलौ पातु सर्वदा ॥९॥
कण्ठ मे पातु वैदेही हृदयं राघव प्रिया ।
करौ विदेहतनया पार्श्वं भूमि सुतामम ॥१०॥
उदरं पातु कौशल्यातनयप्रेयसी सदा ।
उरु रक्षतु वैदेही जानुनी जनकोद्भवा ॥११॥
पादौरक्षतु मे नित्यं रामपत्नीदृढ़व्रता ।
देवी पातु सर्वाङ्गं मम पङ्कजलोचना ॥१२॥
दैत्य दानव भूतेभ्यः पातुमां राघव प्रिया ।
राजरोग भयेभ्यो मां पातु पंकज धारिणी ॥१३॥
प्रयाण काले सीतायाः यः पठेत्कवचं परम् ।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो निर्वाणमधि गच्छति ॥१४॥
अश्वमेधायुतफलं पठनाल्लभतेनर ।
नित्यं पठतिभक्त्याय: तस्य सीता प्रसीदति ॥१५॥
राज्यलाभो भवेत्तास्यं रामभक्तिश्च पुष्कला ।

इतीदंकवचं पुण्य प्रातः सायं पठेन्नर ॥१६॥
तस्य भक्तिः समृद्धिःस्यादायु कीर्तिश्चवर्द्धते ।
प्रसन्नो रामचन्द्रश्च भवेदिह न संशयः ॥१७॥

ध्यानम्—

अरुणारविन्द चरणां समुल्लासत्तरुणार्क,
विम्ब कमनीय कुण्डलाम् ।
मिथिलाधिपस्य तन यामुपास्महे,
करुणां विदेहविमलोत्पलेक्षणाम् ॥

मन्त्र—श्रीसीतायै स्वाहा = श्री सीतायै नमः ।

श्रीमज्जानकी-पञ्चकम्

(१)

स्मरामः प्रातः श्रीजनकतनया चन्द्रवदनं,
ललाटे श्रीखण्डं जलजनयरम् राममुकुम्म् ।
श्रवस्ताटंकार्चं भृकुटि कुटिलं कुन्ददशनं,
कपोलं श्रीपाण्डुम् फलदमरुणोष्टं मितहसम् ॥

(२)

स्मरामः प्रातः श्रीमिथिल नृपकन्या करयुगं,
सपद्मं सौवर्णांगदवलयमंगुष्ट सुयवम् ।
नखांशु प्रावालं तलविजयसिन्दूरनिचयं,
घनश्यामस्पर्शं सुमणि कट काङ्गुल्येविधरम् ॥

(३)

सदा नौमिप्रातः क्षितिपसुत पत्न्यङ्घ्रियुगलं,
पटाः फेनस्निग्धं नव कमल पत्रारुणजितम् ।

स्फुरल्लाक्षारागं घुसृणमसृण पुरुरधरं,
ध्वजा बिन्दूर्ध्वजे कुशपविधनुश्चिह्नमतुलम् ॥

(४)

हृदिध्यामः प्रातः सयवसुकुमारांकुरजितां,
विशालां सीतायाः कनक नव वल्लीमपजयाम् ।
सृजा पुष्पैः मुक्तैः सगलमणि रत्नैरुपचितीं,
तडिन्मूर्ति पूर्ति भुवन जनकामान्भगवतीम् ॥

(५)

द्वयंब्रूमः प्रातर्गत बयसि सीताक्षरमिदं,
जगद् भव्यं दिव्यं भवभयदलं मन्त्र विपुलम् ।
चतुर्णां संजन्यं विधि हरि हरैर्ज्ञेयमनिशं,
त्रयीविद्यादातृ सुखदमथ सेव्यं मुनिजनैः ॥
इदं पञ्चश्लोकं व्युषसिमनुजो मानस फलं,
धनापत्यं राज्यं लभति पतिवीरं पतिपरा ।
सुपुत्रं सुप्रज्ञां द्विज कुलमभीष्टं हरिपुरीं,
पठेद्भक्या ध्यात्वा रहसि वचसाग्रेणहृदये ॥
इति श्री सिद्धेश्वर तन्त्रे श्रीराम लक्ष्मण सम्बादे श्रीजानकी प्रातः पञ्चकम् ।

पद

स्वामिनी सिया हमारी।
फिकर मोहे काहे की ॥ टेर ॥
नैहर मिथिला राज विराजे।
अवध पुरी रजधानी ॥ फिकर मोहे काहे की ॥१॥
उपजहि जासु अंशते अगणित।
उमारमा ब्रह्माणी ॥ फिकर मोहे काहे की ॥२॥
जिनके ससुर महीपति दशरथ।
स्वामी श्री अवध बिहारी ॥ फिकर मोहे काहे की ॥३॥
देवर भरत लखन रिपु सूदन।
खास दास त्रिपुरारी ॥ फिकर मोहे काहे की ॥४॥
रिद्धि सिद्ध चरनन पर राजत।
हनुमत पांय पुजारी ॥ फिकर मोहे काहे की ॥५।
'प्रेमलता' कलजुग का करि है।
रखि हैं स्वामिनी संभारी ॥ फिकर मोहे काहे की ॥६॥

श्री जानकी चरण चिह्न

वाम पद

ध्यावहिं मुनीन्द्र सिय पद कंज चिह्नराज।
सन्तन सहायक सुमंगल सदोह हीं॥
ऊर्ध्वरेखा १ स्वस्तिक २ अष्टकोण. ३ लक्ष्मी ४ हल,
मूसल ६ औ शेष ७ शर ८ जन जिय मोह हीं।
अम्बर ६ कमल १० रथ ११ वज्र १२ यव १३ कल्पतरु
१४ अङ्कुश १५ ध्वजा १६ मुकुट १७ मुनिमन मोह ही॥
चक्रजू १८ सिंहासन १६ औ यमदंड २० चामर,
२१ छत्र २२ नर २३ जय माल २४ वामपद सोह हीं।

दक्षिण पद

दक्षिण पद सरयु १ गोपद २ धरनी ३ कलश ४ और
पताक ५ जम्बूफल ६ अर्द्धचन्द्र ७ राज हीं। शङ्ख ८ षट्कोण
६ तीन कोण १० गदा ११ जीव १२ विन्दु १३ शक्ति
१४ सुधा कुण्ड १५ त्रिवली १६ सुध्यान काज हीं। मीन
१७ पूर्णचन्द्र १८ वीण १६ बंशी २० औ धनुष २१ तूण
२२ हंस २३ चन्द्रिका २४ विचित्र चौबीस विराज हीं॥

सीतापति पद नित बसत एते मङ्गल दायका।
चरण चिह्न रघुवीर के सन्तन सदा सहायका॥

आरती ।

साजि लीन्हीं भूषण सम्हारी लीन्ही बसन से हाथ
हे कनक थार आरती से हाथ लीन्ही हे० ।
औंटी पौंटी सुन्दरी सहेली सखि सहचरि से ताही विच रे
विराजैं श्री किशोरी जी से ताही० ॥
सिंगार बन फुलवारिया ललित गिरजा वरिया से सखिन
सँभरे आज चलेलीं किशोरी जी सखिन० ।
मिथिला युवति जन गावति मुदित मन से हाथ लीनी रे
हे कनक थार आरती से हाथ० ।
सीया जी के पूजा से प्रसन्न भैली गौरी जी असीस दीन्ही रे
हे सुफल मन का ना, हे असीस० ।
श्री रूपकला गावतीं श्रीं स्वामिनी रिझावती विना योगे जाये
रे हे प्रीतम भक्ति पावती विना० ॥

पुस्तक प्राप्ति स्थानः—

(१) श्री दिव्य कला कुञ्ज, दिव्य कला घाट, श्री अयोध्या
(२) प्रो० विश्वम्भरप्रसाद माथुर,
कायस्थ कोलोनी, सिविल लाइन, अजमेर